Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

कथाकार अखिलेश की चर्चित कहानियों में स्त्री संवेदना: एक विश्लेषण

सिद्धार्थ सिंह
शोध छात्र, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु ,सिद्धार्थनगर

सारांश:–

समकालीन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कथाकार अखिलेश अत्यन्त प्रमुखता के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। वर्तमान समाज की विडम्बनात्मक स्थिति एवं मानवीय संवेदना का चित्रण उन्होंने अत्यन्त प्रभावी रूप से अपने साहित्य में किया है। उनकी कहानियाँ अत्यन्त गहरे स्तर पर वर्तमान मनुष्य की मनःस्थिति का विश्लेषण करती हैं। स्त्री सदैव से अपनी अस्मिता एवं पहचान के लिए संघर्ष करती रही है। अखिलेश की कहानियों की स्त्रियाँ भी इससे अलग नहीं हैं। इनकी कहानियों की स्त्रियाँ जीवन एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर अपनी अस्मिता को लेकर संघर्ष करती दिखाई देती हैं। अखिलेश की कहानियों की स्त्रियाँ पितृसत्तात्मक समाज के मानदण्डों के बीच अपने अस्तित्व, अस्मिता एवं अधिकारों के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई पड़ती हैं। अखिलेश स्त्री को सहानुभूति का पात्र न बनाकर उसे एक साधारण मनुष्य के रूप में समाज एवं परम्परागत बन्धनों से जूझता हुआ प्रस्तुत करते हैं। यह शोध-पत्र अखिलेश की 'अंधेरा', 'अगली शताब्दी के प्यार का रिहर्सल', 'शापग्रस्त', 'श्रृंखला', 'जलडमरूमध्य', 'हाकिम कथा', 'यक्षगान' जैसी कहानियों का विवेचन करता है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य अखिलेश की कहानियों में निहित स्त्री के सामाजिक एवं मानसिक संघर्ष तथा उसकी संवेदना का विश्लेषण करना है।

मुख्य शब्द: स्त्री-संवेदना, पितृसत्तात्मक समाज, सामाजिक संघर्ष, समकालीन हिन्दी कहानी, स्त्री-विमर्श

कथाकार का परिचयात्मक विवरण:–

समकालीन साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाने वाले कथाकार अखिलेश का जन्म 6 जून 1960 ई० को सुल्तानपुर जनपद के मलिकपुर नोनरा ग्राम में हुआ। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की, इसके उपरान्त ये सृजन-कर्म में संलग्न हो गए। इन्हें अपनी यशस्वी पत्रिका 'तद्भव' के माध्यम से अपार ख्याति प्राप्त हुई। इन्होंने समकालीन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, मानव के भीतरी अन्तर्द्वन्द्व एवं मनुष्य-जीवन की विडम्बनाओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया। इनकी लिखी अनेक कहानियों का मंचन हुआ तथा कुछ कहानियों का दूरदर्शन पर प्रसारण भी किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में अखिलेश जी की कुछ चर्चित कहानियों में स्त्री-संवेदना का विश्लेषण किया गया है। इन्होंने 'शापग्रस्त', 'चिट्ठी', 'अंधेरा', 'आदमी नहीं टूटता', 'मुक्ति' जैसी कहानियाँ तथा 'अन्वेषण' और 'निर्वासन' जैसे श्रेष्ठ उपन्यासों की भी रचना की है।

अखिलेश इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने हिन्दी कहानी को उसके परम्परागत ढाँचे से बाहर निकालने का प्रयास किया। उनकी कहानियाँ आज के समाज की जटिलता और विडम्बना को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियों में समाज, राजनीति और बाज़ार का यथार्थ समाहित है। उन्होंने भाषा-शैली में भी अनेक प्रयोग किए हैं। उन्होंने परम्परागत व्याकरण और शैली के पैमानों को न अपनाकर सत्य को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों का प्रयोग किया। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ पाठक के हृदय को गहराई से प्रभावित करती हैं।

परिचय:–

समकालीन कथा-साहित्य में मानव की मनःस्थिति, मानवीय संवेदना तथा मानव-जीवन की विडम्बनात्मक स्थिति

को गहरे स्तर पर चित्रित किया गया है। वर्तमान कहानीकारों ने मनुष्य के मन के भीतर उतरकर उसके अन्तर्मन में चल रहे प्रश्नों एवं उसके भीतरी द्वन्द्वों को महसूस किया है और उसे पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है।

इसी क्रम में कथाकार अखिलेश ने अपने साहित्य में मानव-संवेदनाओं को सूक्ष्मतम स्तर पर अनुभव किया है तथा मनुष्य के मानसिक द्वन्द्व और समकालीन समाज से जुड़े प्रश्नों पर विचार किया है। अखिलेश ऐसे कहानीकार हैं जिनकी कहानियों की स्त्रियाँ दया और सहानुभूति की पात्र न होकर आत्मविश्वास, चेतना और स्वतंत्रता से परिपूर्ण हैं। वे पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बनाए गए नियमों से न बँधकर पितृसत्ता से प्रश्न करती हुई दिखाई देती हैं। अखिलेश की कहानियों की नारी परम्पराओं एवं मान्यताओं के बोझ तले दबी हुई नहीं है। उसका जीवन दूसरों को प्रसन्न रखने के लिए आत्म-त्याग और कुंठा का पर्याय नहीं है, बल्कि उसकी अपनी इच्छाएँ और भावनाएँ हैं।

अनुसंधान का उद्देश्य:–

- अखिलेश की कहानियों में स्त्री की मानसिक संवेदना एवं उसकी मनःस्थिति का अध्ययन करना।
- पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री के संघर्ष का अध्ययन करना।
- समकालीन स्त्री-विमर्श में कथाकार अखिलेश की भूमिका को स्पष्ट करना।
- वर्तमान समय में स्वयं को स्थापित करती हुई स्त्री की बदलती मनोवृत्ति का अध्ययन करना।

अखिलेश की चर्चित कहानियों में स्त्री

अंधेरा:–

इस कहानी में प्रमुख स्त्री पात्र रेहाना नामक युवती है। वह विश्वविद्यालय की छात्रा है तथा प्रेमरंजन नामक युवक की महिला मित्र भी है। वह अपनी शर्तों पर चलती है और अपनी शर्तें मनवाना भी भली-भाँति जानती है। वह प्रेमरंजन को अपने अनुसार ढालना चाहती है और उससे भिन्न-भिन्न प्रकार की माँगें करती है। वह प्रेमरंजन से क्लीन शेव्ड होने के लिए कहती है। वह कहती है "क्या तुम मेरे लिए अपनी दाढ़ी कुर्बान नहीं कर सकते?" प्रेमरंजन न चाहते हुए भी रेहाना को खुश रखने के लिए क्लीन शेव्ड हो जाता है। प्रेमरंजन विभिन्न मानसिक समस्याओं से गुजरता रहता है। वह कभी रास्ता भटक जाता है तो कभी सड़क पर उलटी-सीधी हरकतें करने लगता है। उसके मन में भाँति-भाँति के उलटे-सीधे विचार आते रहते हैं। रेहाना जहाँ उसे प्रेम करती है, वहीं उसके प्रेम में हावीपन भी दिखाई देता है। वह स्थिर, भावुक और प्रभावी स्वभाव की लड़की है।

सम्पूर्ण कहानी में प्रेमरंजन रेहाना से प्रेम की याचना करता दिखाई देता है, परन्तु रेहाना उसकी प्रेमजनित माँगों पर कभी पसीजती नहीं है। वह उसे प्रेम तो करती है, किन्तु एक निश्चित दूरी बनाए रखती है। प्रेमरंजन, रेहाना के मुस्लिम होने को लेकर भी अपराध-बोध से ग्रस्त रहता है। कथा के अन्तिम चरण में साम्प्रदायिक दंगे होते हैं। मुस्लिमों के घर जलाए जाते हैं, हत्याएँ होती हैं। प्रेमरंजन फूट-फूटकर रोता है और रेहाना उसे सांत्वना देती है।

अगली शताब्दी के प्यार का रिहर्सल:–

इस कहानी की प्रमुख पात्र 'दीपा' है। उसके पिता एक सम्पन्न एडवोकेट हैं। दीपा हर क्षेत्र में आगे रहने की इच्छा रखने वाली, आत्मविश्वास से पूर्ण, फैशनेबल एवं चतुर लड़की है। वह प्रारम्भ से ही किसी भी प्रकार सभी से आगे रहना चाहती है। वह अपने पिता की प्रिय संतान है और वह पिता को माँ की अपेक्षा अधिक महत्त्व देती है। वह स्कूल के दिनों में अपनी सहेलियों के सभी अच्छे नोट्स और किताबें पढ़ लेती है, किन्तु अपनी किसी को नहीं देती। एम०ए० में पहुँचने पर वह अपने लिए एक सुरक्षित जीवनसाथी की तलाश करती है, जो सुन्दर हो

तथा संभावनाओं से युक्त हो। ऐसे में उसकी दृष्टि जितेन्द्र पर जाती है, जो आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा है। वह उससे इसलिए प्रेम करती है क्योंकि उसमें आई०ए०एस० बनने की सम्भावना है।

दीपा अति महत्वाकांक्षी है। साथ ही वह परिस्थितियों से निपटना तथा विपरीत समय में धैर्य बनाए रखना भी भली-भाँति जानती है। जब उसके पिता को टिकट नहीं मिलता, तो वह उन्हें ढाढ़स बँधाती है और जब जितेन्द्र आई०ए०एस० में चयनित नहीं होता, तब भी वह निरन्तर अपने भविष्य को लेकर नई योजनाएँ बनाती रहती है। कुल मिलाकर, किसी भी प्रकार अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए वह निरन्तर प्रयास करती रहती है।

श्रृंखला:–

'श्रृंखला' कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र सुनिधि है। वह रतन कुमार नामक युवक से प्रेम करती है। रतन कुमार और सुनिधि छात्र-जीवन के मित्र हैं। रतन कुमार अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि युवक है, किन्तु वह नेत्रों की बीमारी से पीड़ित है और बहुत कम देख पाता है। उसके माता-पिता की दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी है। रतन कुमार अत्यन्त मेधावी छात्र है, किन्तु नेत्रों से कमजोर होने के कारण कभी-कभी असहायता की स्थिति में पहुँच जाता है। ऐसे समय में सुनिधि उसे सम्बल प्रदान करती है। वह उससे सहानुभूतिमय प्रेम करती है और रतन भी सुनिधि से स्नेह करता है। रतन शीघ्र ही लेक्चरर बन जाता है और सुनिधि भी एक बड़ी कम्पनी में नौकरी करने लगती है।

सुनिधि सदैव रतन की प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है। रतन शीघ्र ही अपने वामपंथी विचारों के कारण शहर में प्रसिद्ध हो जाता है। वह भ्रष्टाचार और शोषण की समाप्ति की इच्छा रखता है, किन्तु साथ ही वह मानसिक समस्याओं से भी जूझता रहता है। वह समाचार-पत्रों, टी०वी० न्यूज़ आदि में शोषण, बलात्कार, हत्या और भ्रष्टाचार की खबरों से अत्यन्त विचलित हो जाता है। अतः वह इन सब से बचने के लिए स्वयं को समाज से अलग कर लेता है। वह अपने घर में कैद हो जाता है और अवसाद में चला जाता है। ऐसे समय में रतन के बाबा सुनिधि को उसकी स्थिति बताते हैं और उससे मदद माँगते हैं। सुनिधि सब कुछ छोड़कर रतन के पास आती है और नाटकीय ढंग से उससे कहती है- "तुम यहाँ घर में बन्द हो और बाहर आग लगी हुई है। ऐसा लगता है जैसे देश में बगावत हो गई है। तमाम लोग सरकार, धनिकों और धर्माधीशों के खिलाफ सड़कों पर उतर आए हैं। ऐसा लगता है कि 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद पहली बार इस देश में सत्ता के विरोध में इतना गुस्सा पनपा है।" ऐसा कहकर वह रतन के सामने क्रान्ति और आन्दोलन का एक काल्पनिक संसार खड़ा कर देती है। रतन उछल पड़ता है। उसके भीतर नई आशा का संचार होता है। सुनिधि धीरे-धीरे उसे अवसाद से बाहर ले आती है। इस कहानी में अखिलेश ने स्त्री को कमजोर पड़ते पुरुष की जीवन-शक्ति के रूप में वर्णित किया है, साथ ही उसे पुरुष के जीवन की प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया है।

शापग्रस्त:–

'शापग्रस्त' अखिलेश की एक चर्चित कहानी है। इस कहानी का प्रमुख नायक प्रतिभाशाली किन्तु मसखरा युवक प्रमोद वर्मा है, जो अपने आप से असन्तुष्ट है। वह कनिष्ठ अभियन्ता के पद पर कार्यरत है। उसके पास एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए आवश्यक घर, परिवार, गाड़ी और सुविधाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु फिर भी वह प्रसन्न नहीं है। वह मानसिक रूप से अस्थिर है।

उसे ऐसा प्रतीत होता है कि नौकरी छोड़ देने से उसे संतुष्टि मिलेगी, परन्तु ऐसा नहीं होता। इस कहानी में यह दिखाया गया है कि यदि कोई व्यक्ति ईमानदारी से कमाए हुए धन से जीवन-यापन करना चाहे, तो यह अत्यन्त कठिन है। व्यक्ति को न चाहते हुए भी भ्रष्टाचार के दलदल में उतरना ही पड़ता है। प्रमोद के असहाय हो जाने पर उसकी पत्नी सरोज उसे किसी बड़े बुजुर्ग से मिलने की सलाह देती है। सरोज की सलाह मानकर प्रमोद एक सौ बारह वर्ष की साबुत दाँतों वाली बुढ़िया की तलाश में निकल पड़ता है। नदी के किनारे उसे वह एक सौ बारह

वर्ष की साबुत दाँतों वाली बुढ़िया मिलती है, जो उसे सच्चे सुख का मार्ग बताती है। इस प्रकार की अलौकिक प्रेरणा देने का कार्य सदियों से ऋषि, मुनि, सिद्ध-संत या वयोवृद्ध सफेद बालों वाले महात्मा करते आए हैं, किन्तु शापग्रस्त में यह कार्य एक वृद्ध स्त्री करती है। यह इस कहानी का एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है।

जलडमरूमध्य:–

यह अखिलेश की एक महत्त्वपूर्ण कहानी है। इसकी प्रमुख स्त्री पात्र मनजीत है। वह एक आधुनिक शहरी लड़की है, जो पढ़ी-लिखी और समझदार है। वह कार चलाती है और सिगरेट पीती है। चिन्मय उसका पति है। वह अपने सास-ससुर को शहर में अपने साथ रखती है और उन्हें यथासम्भव खुश रखने का प्रयास करती है, जिससे उसके ससुर सहाय साहब अपनी सम्पत्ति उसके नाम कर दें। मनजीत के लिए चरित्र जैसे नैतिक मूल्य अधिक महत्त्व नहीं रखते। वह कार्यालय में अपने बॉस को खुश करने के लिए उससे सम्बन्ध भी बनाती है। जब सहाय साहब मृत्यु-शैय्या पर होते हैं, तो वह अपने पुत्र मनू को ढाल बनाकर उससे सम्पत्ति की माँग मनू के माध्यम से करती है। सहाय साहब चिरैयाकोट स्थित अपना पुश्तैनी मकान नहीं बेचना चाहते, किन्तु मनजीत उन्हें मनू के माध्यम से भावनात्मक रूप से तोड़ने का प्रयास करती है। इस षड्यन्त्र में उसका पति चिन्मय भी समान रूप से उसका साथ देता है।

मनजीत निरन्तर भीतरी खालीपन और आपसी रिश्तों में आई दूरी से जूझती रहती है, जो आज के महानगरीय जीवन में रहने वाले एकल परिवारों की एक प्रमुख समस्या है। इस कमी को वह तात्कालिक सुखों और सम्पत्ति के माध्यम से दूर करने का प्रयास करती है। कुल मिलाकर, वह एक ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने पैरों पर खड़ी है, किन्तु अपने नीचे की भूमि को मजबूत करने के लिए परम्पराओं तथा नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का अतिक्रमण कर देती है।

हाकिम कथा:–

यह अखिलेश की एक अन्य कहानी है। इसकी प्रमुख पात्र गायत्री है। वह एक तलाकशुदा स्त्री है। वह एक ऐसी स्त्री है, जो अपनी भावनाओं और संवेदनाओं से घिरी हुई है। उसका पति एक हायर क्लास सर्विसमैन है, जो अपने साथ पार्टियाँ, क्लब, शराब, गेस्ट, चीफ और दावतों का माहौल भी लाता है। धीरे-धीरे गायत्री को इन सभी से वितृष्णा होने लगती है। वह अपने स्वभाव और संवेदनाओं से समझौता नहीं कर पाती और अन्ततः दोनों का तलाक हो जाता है। विडम्बना यह है कि गायत्री की दोनों पुत्रियाँ भी माँ की अपेक्षा पिता की ओर अधिक झुकी हुई हैं। वे गायत्री की उपेक्षा करती हैं और पुनीत की दूसरी पत्नी मंदिरा को माँ कहती हैं। गायत्री एक ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जो सुख-सुविधाओं की अपेक्षा मानसिक तुष्टि और संवेदनाओं को अधिक महत्त्व देती है।

यक्षगान:–

अंधेरा कहानी-संग्रह की कहानी यक्षगान स्त्री-विमर्श की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र सरोज पाण्डेय है। सरोज जिस दिन पैदा होती है, उसी दिन उसके पिता एक ज़मीन का मुकदमा जीत जाते हैं। अतः सरोज उनके लिए सौभाग्य का प्रतीक बन जाती है। घर के लोग सरोज को सिर-आँखों पर बैठाए रहते हैं। सरोज अत्यन्त सुन्दर है। जब वह जवानी की दहलीज पर कदम रखती है, तो गाँव के ही एक निकम्मे लड़के छैल बिहारी से उसका प्रेम-प्रसंग हो जाता है और अन्ततः वह उसके साथ भाग जाती है। किन्तु छैल बिहारी, जिसके साथ सरोज भागी होती है, उससे प्रेम नहीं करता, बल्कि उसने उसे अपने दोस्तों के सामने परोसने के लिए भगाया होता है। वे उसे लेकर एक बड़े प्रभावशाली नेता के घर पहुँचते हैं। वहाँ सरोज के साथ

छैल बिहारी, उसके दो साथी और वह नेता सभी मिलकर बलात्कार करते हैं। इसके साथ ही औरत की इज्जत को केन्द्र में रखकर राजनीति की गोटियाँ बिछाने का खेल आरम्भ हो जाता है।

सरोज हिम्मत नहीं हारती, बल्कि वह उन सबके खिलाफ बयान देकर उनकी सारी चालें उलट देती है और आश्चर्यजनक ढंग से स्वयं को छिपा लेती है। इस कहानी से यह स्पष्ट हो जाता है कि पुरुष-प्रधान समाज और राजनीति के गन्दे गलियारों में किस प्रकार एक औरत की अस्मत को सीढ़ी बनाकर ऊँचाई तक पहुँचा जाता है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि यदि स्त्री के प्रति सहानुभूति दिखाई जाती है, तो उसके पीछे भी कोई न कोई महत्त्वाकांक्षा ही निहित होती है। इस कहानी की दूसरी प्रमुख स्त्री पात्र मीरा यादव है, जो एक चालाक नेता है। वह सरोज के बलात्कार की कथा को एक राजनीतिक संभावना के रूप में देखती है और इसी महत्त्वाकांक्षा के कारण वह सरोज को आज़ाद करा लाती है।

निष्कर्ष:–

कथाकार अखिलेश की कहानियों में स्त्री परम्परागत रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर स्वयं को मजबूती के साथ स्थापित करने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है। वे स्त्री को न तो महिमा-मण्डित करते हैं और न ही उसकी पीड़ा का चित्रण त्यागिनी के रूप में करते हैं। वे उसे आज के समाज में अपनी स्वतंत्रता और आवश्यकता को लेकर तीव्र संघर्ष करती हुई स्त्री के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ उसके लिए सामाजिक और नैतिक मूल्य गौण हो जाते हैं। अखिलेश की कहानियों की स्त्रियाँ स्त्री-स्वतंत्रता की उद्घोषणा करती हुई प्रतीत होती हैं। वे परम्पराओं और नैतिक मूल्यों में न उलझकर स्वयं को सशक्त और सक्षम बनाने के लिए नैतिकता और शीलता का अतिक्रमण करती हुई भी दिखाई देती हैं। उनके लिए मुक्ति का प्रश्न आत्ममुक्ति का नहीं, बल्कि परम्पराओं, पारिवारिक बन्धनों और जीवन की जटिलताओं से मुक्ति का प्रश्न बन जाता है। वे आत्मविश्वास से भरपूर, समझदार, चालाक और हर परिस्थिति को संभाल लेने का हुनर रखने वाली स्त्रियाँ हैं। अखिलेश की कहानियों के माध्यम से बदलते हुए समाज और बदलती हुई परिस्थितियों के बीच आज की स्त्री की मनोवृत्ति का यथार्थ विश्लेषण किया जा सकता है। इसके साथ ही नारी-जीवन की जटिलताओं और समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए स्त्री द्वारा हर मोड़ पर किए जा रहे संघर्ष को भी समझा जा सकता है। यह कहना बिल्कुल उचित होगा कि अखिलेश की कहानियाँ समकालीन समाज में स्त्री की स्थिति का एक यथार्थ दस्तावेज हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची:–

1. अखिलेश : अंधेरा (कहानी-संग्रह अंधेरा), राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं० 139–147
2. अखिलेश : अगली शताब्दी के प्यार का रिहर्सल (कहानी-संग्रह शापग्रस्त), राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ सं० 75–87
3. अखिलेश : शापग्रस्त, राधाकृष्ण पेपरबैक्स
4. अखिलेश : जलडमरूमध्य, शापग्रस्त कहानी-संग्रह, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, पृष्ठ सं० 123–179
5. अखिलेश : हाकिम कथा, सम्पूर्ण कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं० 357–375
6. कथाकार अखिलेश : सृजन के आयाम कथाकार अखिलेश : सृजन की परिधि
7. बनास (जन-साहित्य संस्कृति का संचालन : अखिलेश विशेषांक)
8. प्रतिनिधि कहानियाँ : अखिलेश (सम्पादक – मनोज कुमार पाण्डेय)